भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 28 जून - 3 tqykbZ 2016 साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	जून								जुलाई			सलाह
दिनांक	23	24	25	26	27	28	29	30	1	2	3	
भामौवि दिनांक	वास्तविक वर्षा (मिमी)					संभावित वर्षा (मिमी)						
पंजाब												फसल वानस्पतिक अवस्था में है| कपास पर सफेद मक्खी का औसत प्रकोप कम है| सफेद मक्खी की संख्या खारा में 3.67 प्रौढ़ प्रति पत्ती; रोमना अलबेलासिंह में 1.43 प्रौढ़; बारगरी में 2.30 प्रौढ़; शेरसिंह वाला में 0.93 प्रौढ़ तथा सुखनवाला गाँव में 0.83 प्रौढ़ प्रति पत्ती रिकार्ड की गई| कपास तथा खरपतवारों पर सफेद मक्खी के प्रकोप का नियमित निरीक्षण करते रहें| सफेद मक्खी बेंगन, टमाटर, भिंडी, मूंग, मेश तथा ग्वार जैसी दूसरी एकान्तर पोषक फसलों को भी प्रकोपग्रस्त करती है| इन फसलों पर भी समय पर प्रबंधन के लिए इनकी नियमित निगरानी करते रहें| वर्षा न होने की स्थिति में फसल एक महीने की होने पर किसान भाई कपास की सिंचाई करें| सिंचाई के बाद, यूरिया की आधी मात्रा अर्थात बीटी संकरों के लिए 65 किग्रा. तथा बीटी रहित किस्मों के लिए 30 से 35 किग्रा. मात्रा दें| हरियाणा के अधिकांश हिस्सों में फसल पौद-अवस्था में है| पहले बोई गई फसल में गुड़ाई करें| सिरसा में फसल 45 से 50 दिनों की वानस्पतिक अवस्था में है| पहली सिंचाई के बाद अंत:सस्य क्रियाएँ की जा रही हैं| पहली सिंचाई दिए जाने वाले खेतों में खरपतवार का प्रकोप देखा जा रहा है| खेतों की मेढ़ों तथा आस-पास के क्षेत्रों में भी खरपतवारों की उपस्थिति देखी जा सकती है| सफेद मक्खी की संख्या 5 से 16 प्रति 3 पत्तियाँ दर्ज की गई, जिसमें आरसीएच-650बीजी II पर औसत 7.8 प्रति 3 पत्तियां (6 से 10 के मध्य); एचएस-6 पर औसत 10.7 प्रति 3 पत्तियां(7 से 18 के मध्य); गंगानगर अगेती पर औसत 8.8 प्रति 3 पत्तियां(5 से 16 के मध्य) तथा आरएस-2013 पर औसत 8.0 प्रति 3 पत्तियां (5 से 13 के मध्य) बिना फसल सुरक्षा की स्थिति में पाई गई| आईसीएआर-सीआईसीआर सिरसा के प्रायोगिक फार्म पर जैसिड की संख्या 0 से 2 प्रति 3 पत्तियां के मध्य तथा फूलकीट की संख्या 3 से 12 प्रति 3 पत्तियां दर्ज की गई| सिरसा में कुछ स्थलों पर सफेद मक्खी की संख्या 3 से 14 प्रति 3 पत्तियां के मध्य रिकार्ड की गई| किसानों के खेतों में देसी कपास *जी.आर्बोरियम* में कुछ स्थलों पर जड़-गलन देखी गई| संतरा वर्गीय बगीचों के आस-पास के कपास के खेतों में कड़ी निगरानी की आवश्यकता है| किसानों को सलाह दी जाती है कि नत्रजन वाले उर्वरकों की उचित मात्रा का ही अनुप्रयोग करें| श्रीगंगानगर में फसल वानस्पतिक अवस्था में है| सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से नीचे है| नीम आधारित कीटनाशकों का (डिटर्जेंट पाउडर के साथ) अनुप्रयोग कीट संख्या आर्थिक हानि सीमा के करीब पहुँचने पर आवश्यकतानुसार उन्ही खेतों में करें| एजेडीरेक्टिन 1.0% ईसी का 2 मिली/लीटर तथा 500 लीटर पानी प्रति हेक्टर की दर से फसल पर छिड़काव किया जा सकता है|
भटिंडा	8.5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	21	
फिरोजपुर	3	0	0	0	0	1	0	0	0	0	21	
मुकतसर	3	0	0	0	0	0	0	0	0	0	21	
मानसा	3	0	0	0	7	0	0	0	3	4	22	
हरियाणा												
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	9	66	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	9	66	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	2	0	0	0	9	66	
राजस्थान												
हनुमानगढ़	0	1.1	1	0	0	5	2	2	2	5	5	
श्रीगंगानगर	0	0.2	0	0	1	1	2	2	2	5	5	
बांसवाड़ा	11	4.4	2	0.4	0	1	3	2	2	3	4	

												मौसम विभाग के अनुमान के अनुसार भारी वर्षा होने की स्थिति में सफेद मक्खी की संख्या स्वत: ही उल्लेखनीय रूप से कम होने की प्रबल संभावना है|
उड़ीसा												मानसून के सक्रिय होने पर किसानों को कपास की बुआई करने की सलाह दी जाती है| कपास का बीज, खरपतवारनाशक तथा उर्वरक जैसे आदानों को विश्वसनीय स्त्रोतों से खरीदकर रख लें| जमीन की अंतिम तैयारी के समय गोबर की खाद 5 टन प्रति हे. की दर से खेत में डालें| मृदा जांच रिपोर्ट के आधार पर ही उर्वरकों की आधार मात्रा का अनुप्रयोग करें| संकरों के लिए 120:60:60 किग्रा. नत्र:स्फुरद:पोटाश प्रति हे. तथा किस्मों के लिए 90:45:45 किग्रा. नत्र:स्फुरद:पोटाश प्रति हे. उर्वरकों का अनुप्रयोग करें| आधार मात्रा के अंतर्गत स्फुरद की पूरी मात्रा+पोटाश की आधी मात्रा तथा नत्र की एक-चौथाई मात्रा का प्रयोग करें| सामान्य बुआई के लिए दूरी 90×60 सेमी. तथा सघन रोपण प्रणाली(एचडीपीएस) के लिए 60×10 सेमी. रखें| हरी खाद के लिए सनई बीज 25 किग्रा. प्रति हे. कपास बुआई के दूसरे दिन कतारों के मध्य बुआई करें तथा सनई को इसकी बुआई के 25 से 30 दिनों बाद कपास की कतारों के मध्य ही मिट्टी में मिला दें| कपास के बीज को *एजोटोबेक्टर* तथा पीएसबी दोनों 25 ग्रा. प्रति कि ग्रा. बीज दर से उपचारित करें| कपास के साथ अरहर की 8:2 कतारों के अनुपात में अंत:फसल लें| अरंडी, गेंदा तथा मक्का जैसी फांस फसलों की बुआई कपास की फसल के चारों ओर करें| खरपतवार प्रबंधन के लिए अंकुरण-पूर्व अनुप्रयोग के रूप में बुआई के एक दिन पश्चात पेंडीमेथेलिन का 1.0 किग्रा.प्रति हे. के दर से खेत में छिड़काव करें| सघन रोपण प्रणाली के लिए जारी होने जा रही किस्मों क्यूयूएटी बीएस-279 तथा बीएस-30 की बुआई परीक्षण के तौर पर की जा सकती है|
कोरापुट	3	0	5	36	16	84	38	9	12	32	42	
कालाहांडी	6	15	7	0	1	6	32	21	11	10	17	
बोलांगीर	1	29	0	0	0	13	17	17	7	9	21	
गुजरात												गुजरात में मानसून का आगमन हो चुका है| अगले सप्ताह में भारी वर्षा होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए यह सप्ताह बुआई के लिए उपयुक्त समय है| पिछले वर्ष मध्यम तथा दीर्घ अवधि के बीटी-कपास संकरों में गुलाबी सूँडी(पिंक बालवर्म) का प्रकोप दर्ज किया गया| अंत: कम अवधि में तैयार होने वाली किस्मों की बुआई को 90×30 सेमी. दूरी पर विशेषत: सीमित सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में प्राथमिकता दें| किसान भाई अधिक उत्पादन क्षमता वाले कम अवधि के और रस चूषक कीटों के प्रति सहनशील बीटी संकरों की जानकारी के लिए राज्य कृषि विभागों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से संपर्क करें| किसानों को सलाह दी जाती है कि विश्वसनीय बीज खरीदें और उसका बिल/रसीद स्पष्ट उल्लेख के साथ अवश्य लें| हल्की और सीमांत मृदाओं के लिए बारानी क्षेत्रों में 150 से 160 दिनों की कम अवधि की बीटी रहित किस्मों का चुनाव सघन रोपण प्रणाली के अंतर्गत 60×10 सेमी. की दूरी के लिए करें| काली मृदाओं के लिए मध्यम गहरी मृदाओं के लिए कम अवधि के(180 दिनों से कम) रस चूषक कीटों के लिए सहनशील बीटी संकरों का चुनाव करें जिससे नाशीकीटों का प्रभावी प्रबंधन हो सकेगा| शीघ्र तथा समय पर बुआई की गई अगेती फसल नाशीकीटों के प्रकोप से बच जाती है तथा पुष्पन व गूलर निर्माण के महत्वपूर्ण अवस्था में मृदा नमी का उपयोग भी कर लेती है| इसके फलस्वरूप कम आदानों की आवश्यकता के साथ अधिक उपज प्राप्त होती है|
अमरेली	4	0	2	7	1	11	38	20	15	20	36	
भावनगर	5	0	1	6	0	2	20	21	13	30	40	
जामनगर	0	0	0	7	2	9	6	5	10	15	20	
राजकोट	1	3	3	0	2	15	38	9	15	30	50	
भरूच	2	0	0	0	0	0	17	69	4	27	46	
सबरकांठा	11	5	2	0	0	1	3	5	6	5	39	
सुरेन्द्रनगर	0	0	1	0	1	2	38	9	15	30	50	
अहमदाबाद	5	0	0	1	0	1	5	10	15	20	25	
वडोदरा	0	2	1	2	0	7	10	10	15	2	20	
पाटन	5	0	0	0	0	0	0	3	0	5	10	
मेहसाना	1	3	0	0	0	0	5	10	15	20	25	
मध्यप्रदेश												सभी तीन जिलों में कपास की बुआई की जा सकती है| आगामी सप्ताह में अच्छी वर्षा होनें की संभावना है| वर्षा आधारित बारानी क्षेत्रों के लिए लघु तथ मध्यम अवधि की किस्मों को प्राथमिकता दें|
खरगोन	8	11	32	0	0	11	13	3	2	4	10	
धार	6	4	4	1	2	3	8	23	13	0	6	

खंडवा	8	3	6	1	0	0	6	3	5	5	14	
महाराष्ट्र												मानसून अब पूरे राज्य में छा गया है| महाराष्ट्र के सभी कपास उत्पादक जिलों में कपास बुआई के लिए आवश्यक पर्याप्त वर्षा हो चुकी है| पूरे राज्य में अच्छी वर्षा होने के पूर्वनुमान को ध्यान में रखते हुए विगत सप्ताह तथा इस सप्ताह में जल संग्रह की तैयारियां तुरंत पूरी करें| पहले बोई गई फसल में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें| उचित जल निकासी के साथ नाली- मेढ़ पद्धति अथवा चौड़ी-बैड-नाली(बीबीएफ) पद्धति से बोई गई फसल ऐसी परिस्थिति में अधिक लाभान्वित होगी| महाराष्ट्र के लिए अच्छे मानसून की भविष्यवाणी को दृष्टिगत रखते हुए बहुत से बीटी संकरों से अच्छी उपज मिलेगी| यद्यपि मेंढ़ पर 90×30 सेमी. दूरी पर बुआई किए गए लघु तथा मध्यम अवधि के संकरों का निष्पादन बारानी तथा सिंचित परिस्थितियों में बेहतर रहेगा| संरक्षित सिंचाई की सुविधा नहीं होने वाले खेतों में दीर्घ अवधि की क़िस्में व संकर न लगाएँ| लघु अवधि की क़िस्मों की पुष्पन तथा गूलर निर्माण जैसी महत्वपूर्ण अवस्थाओं में पर्याप्त नमी उपलब्ध रहेगी|ये किस्में कली तथा पुष्पन अवस्था में गूलर की सूँडी के प्रकोप से भी बच जाएंगी| कम अवधि 140 से 160 दिनों की सुगठित क़िस्मों एनएच-615, पीकेवी-081, सूरज, एलआरके-516, फुले धनवंतरि, आदि से सघन रोपण प्रणाली के अंतर्गत अधिक उपज मिलेगी| सघन रोपण प्रणाली में 60×10 सेमी. (फुले धनवंतरि के लिए 45×10 सेमी. दूरी पर यदि इस प्रकार की किस्मों की बुआई की जाती है तो फसल सूखा-प्रतिबल तथा गूलर की सुंडियों के नुकसान से बच जाएगी । सिंचित खेतों में मध्यम अथवा लंबी अवधि की किस्मों/बीटी संकरों की खेती की जा सकती है| यद्यपि गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए उचित नाशीकीट निरीक्षण व निगरानी तथा प्रबंधन आवश्यक होंगे| बारानी क्षेत्रों में मेढ़ पर बुआई, विशेष रूप में सघन रोपण प्रणाली में मेढ़ों पर बुआई करना एक प्राथमिकता होगी| गोबर की खाद 5 से 10 टन प्रति हे. की दर से अथव कंपोस्ट का पहली वर्षा के तुरंत बाद अनुप्रयोग करें| *एजोटोबेक्टर* और पीएसबी दोनों 25 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज दर का अनुप्रयोग पोषक-तत्वों के स्थरीकरण करने के लिय करें| पर्याप्त फोस्फोरस तथा पोटाश के साथ नत्र के संतुलित पोषकतत्वों का उपयोग रस चूषक कीटों के प्रति फसल में प्रतिरोधिता निर्माण में सहायक होते हैं| बुआई के समय उर्वरकों की आधार मात्रा का अनुप्रयोग तथा पुष्पन प्रारंभ होने पर तथा बाद में गूलर निर्माण की अवस्था में उर्वरकों की खण्डित मात्रा देना उपज तथा नाशीकीट प्रबंधन के दृष्टिकोण से एक उपयुक्त स्थिति है| यहाँ प्रति एकड़ के आधार पर उर्वरकों की सिफ़ारिश की गई मात्र दी जा रही है| बारानी कपास के लिए 80 से 100 किग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट+20 किग्रा.यूरिया +20 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश की मात्रा बुआई के समय अथवा बुआई के बाद 20 दिनों के अंदर ही आधार मात्रा के रूप में देना; पुष्पन के समय 20 किग्रा. यूरिया(बुआई के 45 से 50 दिनों पश्चात) तथ बुआई के 70 दिनों पश्चात 20 किग्रा. यूरिया का अनुप्रयोग| सिंचित कपास के लिए 100 से 120 किग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट+25 किग्रा.यूरिया+30 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश आधार मात्रा के रूप में बुआई के समय अथवा बुआई के पश्चात 20 दिनों के अंदर; पुष्पन अवस्था के समय 25 किग्रा. यूरिया(बुआई के 45 से 50 दिनों बाद) तथा बुआई के 70 दिनों बाद 25 किग्रा. यूरिया का अनुप्रयोग
नागपुर	11	1	29	3	20	6	30	24	10	8	5	
वर्धा	21	5	16	0	8	23	25	20	11	8	4	
चंद्रपुर	3	7	1	1	33	26	24	15	12	5	7	
यवतमाल	8	0	9	7	14	9	15	12	10	6	2	
अमरावती	8	2	15	2	4	10	30	24	15	10	8	
अकोला	31	0	11	0	16	7	24	15	10	4	3	
बुलढाना	21	0	14	0	9	3	20	15	21	8	6	
परभणी	3	1	4	19	0	8	18	14	12	14	6	
नांदेड़	1	2	33	22	10	6	10	33	10	15	11	
बीड़	9	10	1	2	0	2	13	10	8	9	9	
वासिम	14	0	5	11	9	12	21	10	8	7	6	
धुले	4	0	7	23	0	0	16	28	7	27	47	
जलगांव	6	1	8	3	0	0	5	15	10	6	10	
जालना	18	0	2	2	1	0	19	10	5	12	4	
औरंगाबाद	24	0	18	0	0	0	18	41	18	22	55	
तेलंगाना												बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए यथासंभव इसी सप्ताह में कपास की बुआई का कार्य पूरा कर लें| बारानी कपास के लिए बुआई के समय अथवा बुआई के 20 दिनों के अंदर 80 से 100 किग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट+20 किग्रा.यूरिया+30 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश आधार मात्रा के रूप में दें; पुष्पन अवस्था पर अर्थात बुआई के 45 से 50 दिनों बाद 20 किग्रा. यूरिया तथ बुआई के 70 दिनों पश्चात 20 किग्रा. यूरिया का अनुप्रयोग करें| सिंचित कपास के लिय बुआई के समय अथवा बुआई के 20 दिनों के अंदर 100 से 120
आदिलाबाद	1	5	9	11	18	10	30	25	4	10	12	
वारंगल	0	18	5	20	1	29	35	30	8	5	12	
खम्मन	0	24	8	49	17	42	50	25	15	12	14	
कारिंगर	0	22	7	26	8	14	35	30	6	10	15	

नालगोंडा	0	5	14	21	0	25	25	25	15	7	12	किग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट+25 किग्रा.यूरिया+30 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश आधार मात्रा के रूप में अनुप्रयोग; पुष्पन अवस्था में अर्थात बुआई के 45 से 50 दिनों बाद 25 किग्रा. यूरिया तथा बुआई के 70 दिनों पश्चात 25 किग्रा. यूरिया का अनुप्रयोग करें|
महबूबनगर	0	0	1	1	0	4	15	20	10	5	10	
आंध्रप्रदेश												कुछ गावों में जहाँ वर्षा 80 मिली से अधिक हो गई है, वहाँ कपास बुआई का कार्य कर सकते हैं| कपास की बुआई का कार्य प्रगति पर है तथा बोई हुई कपास अंकुरण अवस्था में है| प्रकाशम जिले में ग्रीष्मकालीन कपास की बुआई की गई थी| जो वानस्पतिक अवस्था से गूलर प्रस्फुटन अवस्था के मध्य है| लंबी अवधि की कपास को अक्टूबर के बाद गुलाबी सूँडी(बालवर्म) के प्रकोप से बचाने के दृष्टिकोण से लघु तथ माध्यम अवधि की क़िस्मों अथवा संकरों का चुनाव करें|
गुन्टूर	2	11	7	17	1	2	25	20	20	5	4	
प्रकासम	0	1	5	3	0	2	15	10	10	8	4	
कर्नाटक												सूखा की अवधि के कारण हवेरी ,धारवाड़ तथा बेलगाम जिलों के कुछ हिस्सों में बुआई कार्य विलंबित हो गया है| फसल 15 से 20 दिनों की पौध अवस्था में है| अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में कपास बुआई का कार्य प्रगति पर है| बुआई के 20 से 30 दिनों तक खरपतवार निर्गमन की समस्या से बचने के लिए कपास बुआई के तुरंत बाद किसानों को पेंडीमेथेलिन 37.5एससी खरपतवारनाशक का 0.8 मिली/ली पानी की दर से मृदा पर छिड़काव करें| यदि खरपतवार 20 से 25 दिनों की फसल में अधिक है तो अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशक क्वीजोलफॉप इथाइल 1.0 मिली./ली पानी तथा पायरीथायोबेक सोडियम 0.8 मिली./ली. पानी (टैंक मिश्रण) का प्रयोग एक-दल तथा द्विदल खरपतवारों के नियंत्रण के लिए करें| खरपतवार प्रबंधन के लिए सिर्फ आवश्यकतानुसार ही खरपतवारनाशकों का प्रयोग करें| बीटी कपास में यथासंभव अंत:फसल के रूप में एक कतार मूँग, अथवा मटर अथवा सेम(बीन) की लगाने की सिफारिश की गई है| अन्य विकल्प के रूप में सनई की एक कतार कपास की दो कतारों के मध्य बोएँ जिसे बुआई के 25 दिनों पश्चात कपास की कतारों के मध्य ही स्वस्थाने मिट्टी में मिला दें| इससे कपास की फसल को दुष्प्रभावित किए बिना मृदा उर्वरता बढ़ाने में मदद मिलती है|
धारवाड़	3	2	5	1	1	9	10	17	10	5	8	
हवेरी	3	1	3	3	3	7	14	17	15	6	7	
मैसूर	4	1	2	2	5	5	6	5	6	5	6	
तमिलनाडु												कपास का मौसम तमिलनाडू में अभी प्रारंभ नहीं हुआ है| खेतों की तैयारी के लिए जुताई, आदि कार्य चल रहे है|
पेरंबलुर	2	9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
सलेम	18	7	0	0	0	0	1	1	0	0	1	
त्रिची	0	2	0	0	0	0	0	0	0	0	1	
विरुडुनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नन्दनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)